एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मूली की वैज्ञानिक विधि से खेती

(*सुमित कुमार, सुनील कुमार एवं विजय पाल सिंह पंघाल)
सब्जी विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sumitbidlan2@gmail.com

मूली को जड़ वर्गीय सब्जियों में जाना जाता है। मूली आयरन, कैल्शियम और सोडियम के सबसे समृद्ध स्रोतों में से एक है। मूली की जड़ों में जड़ों वाली सब्जियों की तुलना में अधिक कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन सी और प्रोटीन होता है। इसके विशेषता से युक्त पौष्टिक गुणों के कारण, यह लोगों के आहार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मुख्य रूप से सलाद आदि के रूप में खाया जाता है। मूली के सेवन से बवासीर, कब्ज, मूत्र पथ में पथरी बनने से रोकने, पीलिया ठीक करने और भूख बढ़ाने में मदद मिलती है। इन्हें अक्सर पकी हुई सब्जियों के रूप में और अचार के रूप में भी उपयोग किया जाता है। जड़ें और पत्तियाँ एक उत्कृष्ट चारे के रूप में भी काम में ली जाती है

भूमि

मूली की फसल को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। मूली को पीएच 5.5-6.8 वाली अम्लीय मिट्टी में उगाया जा सकता है। रेतीली दोमट मिट्टी जड़ों के शीघ्र विकास के लिए आदर्श होती है। भारी मिट्टी में सही आकार की जड़ें पैदा नहीं हो पाती हैं और मिट्टी में उच्च कार्बोनिक पदार्थ ही अधिक पैदावार दे पाते है।

जलवायु

मूली मूलत सर्दी के मौसम की फसल है लेकिन ऐसी किस्में विकसित की गई हैं जिन्हें गर्मी और वसंत ऋतु में उगाया जा सकता है। । मूली की किस्में जलवायु आवश्यकताओं विशेषकर तापमान के लिए बहुत संवेदनशील हैं। जब तापमान 10-15°C के बीच होता है तो मुख्य सीज़न की किस्मों में सबसे अच्छा स्वाद, बनावट और जड़ का आकार विकसित होता है। समशीतोष्ण प्रकार में, अधिकतम जड़ वृद्धि प्रारंभ में 20-30°C पर और बाद में 10-14°C पर होती है। 25°C से ऊपर के तापमान पर पत्तियों की अधिक वृद्धि हो जाती है। लंबी फोटोपीरियड और गर्म तापमान उचित जड़ विकास से पहले ही जड़ के जल्दी पकने में मदद करते हैं। आम तौर पर पौधे तब उगते हैं जब दिन 8-10 घंटे लंबे होते हैं। कम तापमान पर तीखापन कम हो जाता है। मूली पाले के प्रति सहनशील होती है।

उन्नत किस्में

पंजाब पसंद, जापानी व्हाइट, खड़ी स्वेता, पालम हृदय।

बुवाई का समय

वैसे तो मूली सर्दी के मौसम की फसल है लेकिन इसे गर्मी और बसंत ऋतु में भी उगाया जा सकता है। काशी श्वेता और पंजाब पसंद जैसी किस्मों में उच्च तापमान सहन करने की क्षमता होती है। देसी या

एशियाई किस्मों की बिजाई अगस्त से सितंबर में की जाती हैं एवम यूरोपियन किस्मों की बिजाई अक्टूबर से नवंबर में होती है। किस्मों के सावधानीपूर्वक चयन से मूली को लगभग पूरे वर्ष उगाया जा सकता है।

खेत की तैयारी

बुवाई करने से पहले खेती की तैयारी के लिए पहली जुताई पलटने वाले हल से करनी चाहिए। उसके पश्चात 2 या 3 बार हल या फिर काल्टिवेटर से मिट्टी को भुरभुरी बना लेना महत्वपूर्ण होता है। फिर पाटा के प्रयोग से खेत को समतल बना ले और खेत को खरपतवार रहित कर दे।

बीज की मात्रा

अंकुरण और उपज में सुधार के लिए बुआई से पहले बीजों को एजेटोबेक्टर और पीएसबी से उपचारित किया जाएगा। गाजर के लिए बीज दर 10-12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होगी।

रोपण दूरी

गाजर को मेड़ों पर 45 सेमी और पौधे से पौधे के बीच की दूरी 7.5 सेमी रखकर बोया जाएगा। पौधों के बीच अंतर बनाए रखने के लिए बुआई के 3-4 सप्ताह बाद विरलन किया जाता है।

खाद एवं उर्वरक

मूली पोषक तत्वों, विशेष रूप से पोटाश, का प्रचुर पोषक है। जड़ों के उचित रंग विकास के लिए पोटाश का प्रयोग महत्वपूर्ण है। सीसीएस एचएयू, हिसार प्रति हेक्टेयर 60:24:24 किलोग्राम एनपीके की सिफारिश करता है। लगभग 30 टन विघटित FYM भी डाला जाता है।

सिंचाई

मूली की फसल को तैयार होने के लिए अधिक पानी की जरूरत होती है। अच्छी गुणवत्ता वाली जड़ों की अधिक उपज प्राप्त करने के लिए उचित जल आपूर्ति महत्वपूर्ण है। एक समान अंकुरण के लिए, बुआई अच्छी नमी वाली स्थिति में की जानी चाहिए। हल्की मिट्टी में पहली सिंचाई बुआई के तुरंत बाद और गर्मी में 6-7 दिनों के अंतराल पर करें और सर्दियों में 10-12 दिनों के अंतराल पर करे। मूली की फसल तैयार होने में 4-5 सिंचाई की आवस्तकता होती है।

खरपतवार नियंत्रण

चूंकि मूली तेजी से बढ़ने वाली फसल है, इसलिए खरपतवार की समस्या से निपटने के लिए बुआई के लगभग 2-3 सप्ताह बाद एक निराई-गुड़ाई पर्याप्त होती है। निराई-गुड़ाई के तुरंत बाद मिट्टी चढ़ा दी जाती है, विशेषकर एशियाई किस्मों में जहां जड़ों की प्रवृत्ति मिट्टी की सतह से ऊपर निकलने की होती है। मूली में खरपतवार नियंत्रण के लिए स्टॉम्प (पेंडिमेथालिन) 1.2 लीटर प्रति हेक्टेयर या बेसालिन 1.0 लीटर प्रति हेक्टेयर या लासो (एलाक्लोर) 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव भी प्रभावी है।

खुदाई

मूली की खुदाई तब की जाती है जब जड़ें कोमल होती हैं, अगर जड़ें गूदेदार हो जाती हैं तो उपभोग के लिए अनुपयुक्त हो जाती हैं। यूरोपियन प्रकार की किस्में देसी किस्मों के मुकाबले तेजी से बढ़ती हैं और बुआई के 30-40 दिनों में विपणन योग्य परिपक्वता प्राप्त कर लेती हैं। पंजाब पसंद, तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख मौसमी किस्म है जो बुआई के 45 दिन बाद विपणन योग्य परिपक्वता प्राप्त कर लेती है। अधिकांश अन्य किस्मों को विपणन योग्य परिपक्वता प्राप्त करने के लिए 45-55 दिनों की आवश्यकता होती है। मूली मुरझाने के प्रति अतिसंवेदनशील होती है। जड़ों की कटाई सुबह जल्दी या देर शाम को करनी चाहिए।

कटाई के तुरंत बाद, जड़ की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए उन्हें ठंडे स्थान पर स्थानांतरित कर देना चाहिए।

उपज

मूली की पैदावार किस्म और फसल के मौसम के आधार पर भिन्न-भिन्न होती है। अधिकतम जड़ उपज सर्दी की फसल से और सबसे कम गर्मी की फसल से प्राप्त होती है। जड़ की उपज गर्मियों में 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से लेकर सर्दियों में 600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

फोर्किंग

जड़ों का फटना फोर्किंग कहलाता है और मूली में यह एक आम समस्या है। मिट्टी के सख्त होने, कटाई में देरी और अत्यधिक पानी लगाने के कारण पानी के तनाव के कारण फोर्किंग होती है। इन स्थितियों से बचने से मूली में फोर्किंग को कम करने में मदद मिलेगी।